।। अर्हम्।।

आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज.
दूरभाष नम्बर 01565–224600, 224900 फेक्स
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

मर्यादा महोत्सव का दूसरा दिन
मैं अतीत को देखता हूं तो आचार्य तुलसी नजर आते हैं –आचार्य महाप्रज्ञ

तुलसीराम चोरड़िया–मीडिया संयोजक

श्रीडूंगरगढ़। 21 जनवरी 10 तेरापंथ का महाकुम्भ मर्यादा महोत्सव के दूसरे दिन आचार्य महाप्रज्ञ का 16 वां पदाभिरोहण समारोह का आयोजन किया गया। श्यामप्रसाद मुखर्जी स्टेडियम स्थित मर्यादा समवसरण में उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मैं अतीत को देखता हूं तो मेरे पीछे आचार्य तुलसी खड़े नजर आते हैं और जब भविष्य को देखता हूं तो सामने युवाचार्य महाश्रमण नजर आते हैं। हमारे पास इतने सारे साधू साध्वियों की बड़ी शक्ति है। इनके भीतर प्रज्ञा को जगाना और इनमें से महाप्रज्ञ और महाश्रमण निकालना युवाचार्य महाश्रमण का काम है। यह बहुत बड़ा कार्य है। उन्होंने कहा कि बाल मुनि तेरापंथ का भविष्य है। इनके भीतर संस्कारों का निर्माण करना और भविष्य को शक्तिशाली बनाना है। जिससे ऐसा लेगें कि आचार्य तुलसी ने अवतार ले लिया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि धर्म संघ में आने वाला प्रत्येक सदस्य चित्त समाधि से जीवन जी सके, कभी तनाव में न आये। ऐसी स्थिति का निर्माण करना महाश्रमण का कार्य है। इस मौके पर उपस्थित युवाचार्य महाश्रमण, साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा, मुख्य नियोजिका विश्रुत विभा सहित अनेकों ने मुक अभ्यर्थना की। तीन घंटे से भी ज्यादा तक चले इस समारोह में वक्ताओं ने आचार्य महाप्रज्ञ के अवधानों की चर्चा की एवं व्यक्तित्व और कृर्तव्य को विश्व की समस्यओं को सुलझाने वाला बताया। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी नब्बे वर्ष की उम्र में 250 से भी ज्यादा पुस्तकों का लेखन किया और देश विदेश के शीर्ष नेताओं को समसामयिक मुद्दों पर मार्गदर्शन दिया है।

बालमुनियों की प्रस्तुतियों ने मन मोहा

आचार्य महाप्रज्ञ की अभ्यर्थना में प्रस्तुत बाल मुनियों की कविताओं ने सबका मन मोह लिया। मुनि मृदु कुमार ने जब ''ओ मेरे भगवान सूनों मैं तुम्हें बधाने आया

हूं, भक्त तुम्हारा इसीलिए सबके मन को भाया हूं''कविता को बाल सुलभ आकृति में सुनाया तो पूरी जनता हर्ष विभोर हो गई। मुनि सुधांशुकुमार, मुनि अनुशासन, मुनि हितेन्द्रकुमार, मुनि हेमन्तकुमार, मुनि गौरवकुमार, मुनि मलयज कुमार, मुनि गौतम कुमार, मुनि लब्धिकुमार, मुनि सौम्यकुमार आदि बाल मुनियों की प्रस्तुतियों को सबने सराहाया। इन मुनियों को सुन्दर प्रस्तुति के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने 31–31 कल्याणको की बख्शीश दी।

''महाप्रज्ञ ने कहा'' 37वें भाग का विमोचन

कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचनों की पुस्तक ''महाप्रज्ञ ने कहा'' सिरीज के 37वें भाग का विमोचन आचार्य महाप्रज्ञ ने किया। आचार्य महाप्रज्ञ की यह कृति इतनी लोकप्रिय हो चुकी है कि इसकी लाखों प्रतियां पाठकों तक पहुंच चुकी है। पुस्तक का नया खण्ड जैसे ही प्रकाशित होता है, वैसे ही कृति को खरीदने की लाईन लग जाती है। मुनि जयकुमार ने काव्य स्वरों की प्रस्तुति के साथ प्रस्तुत पुस्तक की प्रथम प्रति आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रण को भेंट की। महाप्रज्ञ ने सीरीज का सम्पादन मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा, साध्वी विमल प्रज्ञा एवं मुनि जयकुमार के द्वारा और प्रकाशन आदर्श साहित्य संघ के द्वारा किया गया। इस मौके पर मुनि वत्सराज ने भी अपनी नवीन कृति विमोचन के लिए आचार्य श्री को समर्पित की। भास्कर के बीकानेर शाखा प्रबंधक अयाज खान ने मर्यादा महोत्सव पर प्रकाशित पुस्तक को भेंट किया। जिसका सम्पादन श्रीडूंगरगढ़ के संवाददाता विशाल स्वामी ने किया।

अभ्यर्थना में बोलने वालों की रही लम्बी सूची

मर्यादा महोत्सव के दूसरे दिन आचार्य महाप्रज्ञ के पदाभिरोहण समारोह में अभ्यर्थना करने वालों की लम्बी सूची रही। संचालक मुनि मोहजीत कुमार सबको कम समय में अपनी भावना रखने का बार–बार आग्रह करते रहे, लेकिन वक्ता अपने उल्लास को रोक पा रहे थे। करीब 46 वक्ताओं ने अपने भावों को प्रस्तुत किया। मुनि जितेन्द्रकुमार, मुनि महावीर, मुनि स्वास्तिक, मुनि आकाश, मुनि मुदित, मुनि मनन, मुनि धन्य, मुनि दीप, मुनि रजनीश, साध्वी सुभप्रभा, साध्वी समताश्री, साध्वी सुधा प्रभा, साध्वी कमलश्री, मुनिगण साध्वी समुदाय, समणी वृन्द, मुमुक्षु परिवार, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल, किशोर मण्डल के सामुहिक गीत सहित आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचन्द मालू, श्रीमती सुशीला पुगलिया, मोहम्मद सकील एण्ड रमजान

आदि ने आचार्य महाप्रज्ञ की अभ्यर्थना की।

तेरापंथ जनगणना बेवसाईट का लोकार्पण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा द्वारा चलाये जाने वाले तेरापंथ जनगणना बेवसाईड का लोकार्पण किया गया। इस साईट से महासभा की प्रत्येक गतिविधि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और तेरापंथ के परिवारों के बारे में उपलब्ध फार्म भी भर सकेंगे। साईट के निर्माता ने खूबियों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। आज से तेरापंथ जनगणना डॉट कॉम नाम से इस साइट को सर्च किया जा सकेगा।

आज होगा मर्यादा महोत्सव का समापन

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में पिछले दो दिन से चल रहे तेरापंथ का महाकुम्भ मर्यादा महोत्सव का आज समापन होगा। आज के कार्यक्रम के बारे में मुनि जयन्त कुमार ने बताया कि मर्यादा महोत्सव का आज मूल कार्यक्रम आयोजित होगा। आज के दिन ही आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने अन्तिम मर्यादा पत्र का निर्माण किया था। मुनि ने बताया कि महोत्सव के अन्तिम दिन आचार्य महाप्रज्ञ अपने शिष्य शिष्याओं के आगामी चातुर्मासों की घोषणा करने के साथ संघ के नाम संदेश भी देंगे। आज के दिन ही हाजरी का कार्यक्रम होगा, जिसमें उपस्थित सभी 400 शिष्य–शिष्याएं पक्तिबंद्ध खड़े होकर मर्यादाओं का पुनरावर्तन करेंगे। कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा श्रीडूंगरगढ़ मर्यादा महोत्सव के लिए निर्मित नवीन गीत को प्रस्तुत किया जायेगा।

तुलसीराम चोरड़िया
मीडिया संयोजक

।। अर्हम्।।

आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज.
दूरभाष नम्बर 01565–224600, 224900 फेक्स
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

सूर्यादय के साथ गुंजी वर्धापना गीतों की स्वर लहरियां
संघ है मेरी शक्ति का स्रोत– आचार्य श्रीमहाप्रज्ञ
तुलसीराम चोरड़िया–मीडिया संयोजक

श्रीडूंगरगढ़ 21 जनवरी 2010। तेरापंथ अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने 16 वें पदाभिरोहण दिवस के प्रथम सम्बोधन में शिखर को छूने के रहस्यों से पर्दा उठाते हुए कहा कि संघ मेरी शक्ति का स्रोत है। इसलिए प्रारम्भ से ही मेरा लक्ष्य संघ को शक्तिशाली बनाने का रहा है। जब संघ शक्तिशाली होता है तो अनेक शक्तिशाली व्यक्तियों को तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक सदस्य का लक्ष्य भी संघ को शक्तिशाली बनाने का होना चाहिए। खुद का विकास संघ के विकास को लक्ष्य कर करना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने कहा कि तेरापंथ और मानव जाति यह दो शब्द मुझे सबसे ज्यादा प्रिय है। तेरापंथ धर्मसंघ शक्तिशाली है। मानव जाति शक्तिशाली बने, इसकी अपेक्षा है। संघ में व्यक्तिवाद को बढ़ावा न मिले। पूजा, अर्चना सभी संघ के लिए होनी चाहिए। तेरापंथ से लाखों लोग जुड़े है। धर्मसंघ के श्रावक समाज में भी जागृति आई है। सबमें दायित्व के प्रति उपचार भाव ही न जगे, उस दायित्व को अन्तर आत्मा से स्वीकार कर निभाने में अपने आप को नियोजित करना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि बचपन से ही मुझे ऐसे संस्कार मिले कि मैं तेरापंथमय बन गया। आचार्य तुलसी ने मुझे दायित्व सौंपा। पर मुझे लगता है उन्होंने मुझे कोई दायित्व नहीं सौंपा। उनके सान्निध्य में शुरू से ही मैंने तेरापंथ के विकास के बारे में चिंतन किया।

आज सूर्योदय से पूर्व ही आचार्य महाप्रज्ञ के वर्धापना में गीतों की स्वर लहरियां गुंजने लग गई। सर्व प्रथम युवाचार्य महाश्रमण ने ''प्रज्ञा शिखर लो शत–शत वंदन'' गीत से वर्धापना की शुरूआत की। इसके पश्चात् युवाचार्य श्री के द्वारा संस्कृत में रचित महाप्रज्ञ अष्टकम् का संत समुदाय ने सस्वर संगान किया। मुमुक्ष परिवार ने गीत के द्वारा अभ्यर्थना की। सूर्योदय के बाद साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के नेतृत्व में साध्वीवृन्द एवं समणीगण तेरापंथ भवन पहुंची। सर्व प्रथम आचार्यो को वंदन करने के पश्चात् साध्वी प्रमुखा ने नया रजोहर एवं पर्मार्जनी आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य महाश्रमण को भेंट की। नये रजोहरण को जनता को दिखाते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने स्वयं के कंधों पर रखा, जिसे देखकर जन समुदाय ने ओम् अर्हम् की ध्वनी से अपने हर्ष को प्रकट किया। समणी मधुरप्रज्ञा एवं सर्व समणी समुदाय ने 'गुरूवर मेरा उद्धार हो' गीत से अपने अन्दर आचार्यवर के गुणों को संक्रात करने का वरदान मांगा। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी राजीमति, साध्वी मुक्तिप्रभा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मुनिगण ने ''जियो वर्ष हजार'' गीत के द्वारा समां बाधां। मुनि भव्यकुमार, मुनि धन्यकुमार ने अपने द्वारा निर्मित कलाकृतियों को आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित कर अभिनंदना की। युवाचार्य महाश्रमण ने अखुट खजाने से गीतों का निर्माण करने वालों को 21 कल्याणक, प्रस्तुति देने वालो को 9 कल्याणक, कला कृतियां भेंट करने वाले मुनिद्वय को 21 कल्याणक बक्शीष दी।

तुलसीराम चोरड़िया,